बौद्ध धर्म का मानने वाला था और उसने बौद्ध धर्म अथवा उसके कुछ परिवर्तित स्वरूप का प्रचार किया।

अशोक ने 'धम्म' के लिए संघ की व्यवस्था नहीं की और भिक्षुक का जीवन व्यतीत करने के लिए नहीं कहा। अतएव उसका व्यक्तिगत धर्म उस धर्म से अलग था जिसका उसने अभिलेखों के माध्यम से प्रचार किया था। डॉ रोमिला थापर का मत है कि "अशोक के लिए धम्म व्यावहारिक जीवन का ऐसा मार्ग था जिसे उसने अपने परिचित दार्शनिकों के नैतिक उपदेशों एवं सम्भवतः अपने जीवन के अनुभव से प्राप्त किया था। वह एक श्रेष्ठतम सामाजिक नैतिकता और नागरिक उत्तरदायित्व की भावना पर निर्भर था।" अशोक के धम्म के सिद्धान्त हिन्दू, बौद्ध तथा अन्य सभी धार्मिक सम्प्रदायों के नैतिक नियमों से लिये गये थे। उसके धर्मप्रचार के मुख्य उद्देश्य सभी नागरिकों में सहिष्णुता और सामाजिक भावना को जागृत करना था। धर्म महामात्यों की नियुक्ति इस तथ्य को प्रमाणित करती है कि अशोक किसी विशेष धार्मिक सम्प्रदाय का समर्थन नहीं कर रहा था बल्कि वह अपनी प्रजा की धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक उन्नति के लिए प्रयत्नशील था।

दूसरे और चौथे स्तम्भलेखों में धर्म प्राप्ति और धर्मोन्नति के लिए नैतिक सिद्धान्तों का उल्लेख किया गया है जो निम्न है - दया, दान, सत्य, शौच (पवित्रता) मृदुता और साधुता। बहु कल्याण, संयम, भाव शुद्धि, कृतज्ञता और दृढ़ भक्ति, समचर्या तथा मोद वृत्ति को भी धम्म का प्रमुख अंग बतलाया गया।

Scanned with CamScanner

अशोक ने केवल अच्छे धर्मों-नीति के लिए ही नहीं बतलाया, बल्कि पाप की ओर ले जानेवाले अवगुणों को भी बतलाया। ये अवगुण हैं— चाण्डय, नैष्ठुर्य, क्रोध, अभिमान और ईर्ष्या।

अशोक ने धर्म के परम्परागत विचार एवं रूढ़ियों से बचने का उपदेश दिया। पुराने रीति-रिवाजों को छोड़कर धम्म-मंगल, धम्म-दान, धम्म-विजय, आदि का पालन करना चाहिए। आध्यात्मिक उन्नति के लिए अशोक ने आत्म-परीक्षा का उपदेश दिया ताकि लोग अपने पापों अथवा कुकर्मों की जानकारी स्वयं कर सकें। जब किसी व्यक्ति को अपने पापों की जानकारी आत्म-परीक्षा से होगी तो उसे वह आसानी से धर्म के रास्ते पर चलकर दूर कर सकेगा।

Next (अशोक के धम्म का सामाजिक पक्ष)

Scanned with CamScanner